

भारत में भ्रष्टाचार

प्रलिस के लयि:

[भ्रष्टाचार बोध सूचकांक](#), [ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल](#), लोकतंत्र, भ्रष्टाचार

मेन्स के लयि:

शासन में पारदर्शता और जवाबदेही, भारत में भ्रष्टाचार के सामान्य कारण और इसकी रोकथाम

प्रसंग:

भारत के प्रधानमंत्री ने [76वें स्वतंत्रता दिवस](#) पर अपने संबोधन में भ्रष्टाचार और [भाई-भतीजावाद की दोहरी चुनौतियों के खिलाफ तीखा हमला](#) किया और कहा कि यद्यपि समय पर इसका समाधान नहीं किया गया तो यह बड़ी चुनौती बन सकती है। साथ ही 'ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल' द्वारा [भ्रष्टाचार बोध सूचकांक](#) 2023 (CPI) जारी किया गया।

- समग्र तौर पर यह सूचकांक दर्शाता है कि पिछले एक दशक में अधिकांश देशों में भ्रष्टाचार पर नियंत्रण की स्थिति या तो काफी हद तक स्थिर या खराब रही है। भारत ने भ्रष्टाचार बोध सूचकांक 2023 में 40 अंक प्राप्त किए।

भ्रष्टाचार:

भ्रष्टाचार सत्ता के पदों पर बैठे लोगों द्वारा किया गया असन्निहित व्यवहार है। इसकी शुरुआत किसी नज्जी लाभ के लिये सार्वजनिक पद का उपयोग करने की प्रवृत्ति से होती है।

- इसके अलावा यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भ्रष्टाचार कई लोगों के लिये आदत का बंधन बन गया है। यह इतनी गहराई तक व्याप्त है कि भ्रष्टाचार को अब एक सामाजिक मानदंड माना जाता है। इसलिये भ्रष्टाचार का तात्पर्य नैतिकता की वफ़िलता से है।

भारत में भ्रष्टाचार के पीछे के कारण:

- पारदर्शता की कमी:** सरकारी प्रक्रियाओं, नरिणय लेने और सार्वजनिक प्रशासन में [पारदर्शता](#) की कमी भ्रष्ट आचरण के लिये अधिक अवसर प्रदान करती है। जब कार्यों तथा नरिणयों को सार्वजनिक जाँच से बचाया जाता है, तो अधिकारी जोखिम के कम डर के साथ भ्रष्ट गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।
- कमजोर संस्थाएँ और अपरभावी कानूनी ढाँचे:** कानूनों और वनियमों को लागू करने के लिये ज़िम्मेदार भारत की कई संस्थाएँ या तो कमजोर हैं या समझौतावादी हैं। इसमें कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ, न्यायपालिका और नरिक्षण निकाय शामिल हैं। कमजोर संस्थाएँ भ्रष्ट व्यक्तियों को जवाबदेह ठहराने में वफ़िल हो सकती हैं तथा यहाँ तक कि भ्रष्टाचार को बढ़ावा भी दे सकती हैं।
 - भ्रष्ट व्यक्तियों को अपर्याप्त सज़ा के कारण दंड से मुक्तिकी धारणा भ्रष्टाचार को और अधिक बढ़ावा दे सकती है। भ्रष्ट आचरण वाले व्यक्तियों को जब यह वशिवास हो जाता है कि वे दंड से बच सकते हैं, तो उनके इसमें शामिल होने की संभावना अधिक हो जाती है।
- कम वेतन और प्रोत्साहन:** सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों, वशिषकर नचिले स्तर के पदों पर बैठे लोगों का कम वेतन उन्हें रशि्वतखोरी और भ्रष्ट आचरण के प्रती अधिक संवेदनशील बना सकता है, क्योंकि वे भ्रष्टाचार को अपनी आय के पूरक के साधन के रूप में देखते हैं।
- नौकरशाही/लालफीताशाही:** लंबी और जटिल नौकरशाही प्रक्रियाएँ तथा अत्यधिक नयिम व्यक्तियों एवं व्यवसायों को प्रक्रियाओं में तेज़ी लाने या बाधाओं को दूर करने के लिये भ्रष्ट आचरण में शामिल होने हेतु प्रेरित कर सकते हैं।
 - भारत का जटिल आर्थिक वातावरण, जिसमें वभिन्न लाइसेंस, परमिट और अनुमोदन शामिल हैं, भ्रष्टाचार के अवसर पैदा कर सकते हैं। व्यवसाय इस माहौल से नपिटने के लिये रशि्वतखोरी का सहारा ले सकते हैं।
- राजनीतिक हस्तक्षेप:** प्रशासनिक मामलों में राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते सरकारी संस्थानों को अपनी स्वायत्तता से समझौता करने को मजबूर होना पड़ सकता है। राजनेता व्यक्तित्व या पार्टी लाभ के लिये अधिकारियों पर भ्रष्ट गतिविधियों में शामिल होने का दबाव डाल सकते हैं।
- सांस्कृतिक कारक:** कुछ संदर्भों में भ्रष्ट आचरण की सांस्कृतिक स्वीकृति हो सकती है, जो भ्रष्टाचार को कायम रखती है। यह धारणा कि "हर

कोई ऐसा करता है" व्यक्तियों को नैतिक रूप से समझौता किये बिना भ्रष्टाचार में शामिल होने के लिये प्रेरित कर सकता है।

- **वहसिलब्लोअर की सुरक्षा का अभाव:** वहसिलब्लोअर की अपर्याप्त सुरक्षा व्यक्तियों को भ्रष्टाचार की रपिर्ट करने से रोक सकती है। संभावित प्रतेशोध का डर मुखबरों को चुप रहने को मजबूर करने के साथ ही भ्रष्टाचार को पनपने में सहायक हो सकता है।
- **सामाजिक असमानता:** सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे सकती हैं, क्योंकि धन और शक्ति वाले व्यक्तियों अपने प्रभाव का उपयोग अधिमान्य उपचार प्राप्त करने तथा बिना किसी परणाम (Without Repercussions) के भ्रष्ट आचरण में संलग्न होने के लिये कर सकते हैं।

सविलि सेवाओं में भ्रष्टाचार की व्यापकता के कारण:

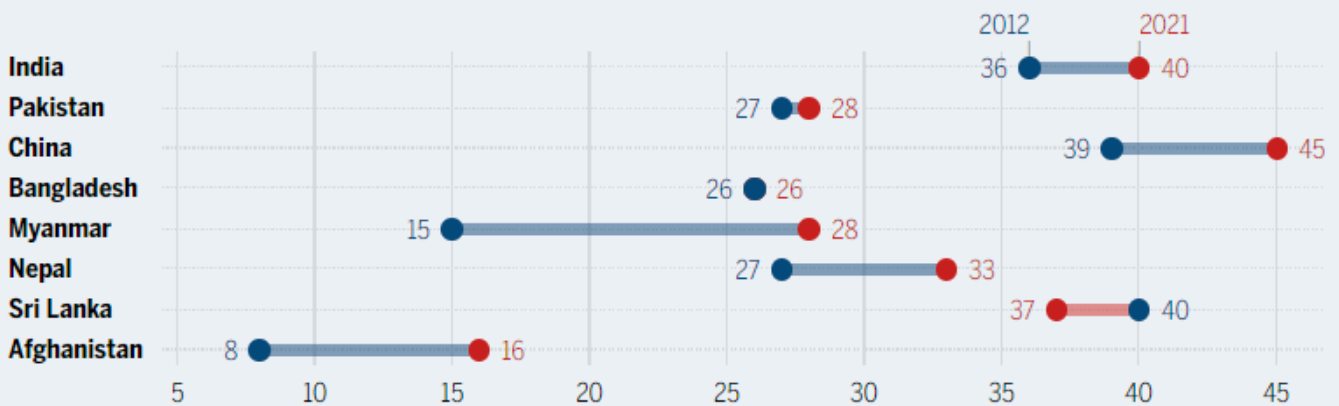
- **सविलि सेवा का राजनीतिकरण:** जब सविलि सेवा के पदों का उपयोग राजनीतिक समर्थन के लिये पुरस्कार के रूप में किया जाता है या रशिवत हेतु स्थानांतरण किया जाता है, तो उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार के अवसर काफी बढ़ जाते हैं।
- **नजी क्षेत्र की तुलना में कम वेतन:** नजी क्षेत्र की तुलना में सविलि सेवकों का वेतन कम हो सकता है, वेतन में अंतर की भरपाई के लिये कुछ कर्मचारी रशिवत का सहारा लेते हैं।
- **प्रशासनिक देरी:** फाइलों की मंजूरी में देरी भ्रष्टाचार का मूल कारण है क्योंकि आम नागरिकों को फाइलों की शीघ्र मंजूरी के लिये दोषी अधिकारियों और प्राधिकारियों को रशिवत देने को मजबूर होना पड़ता है।
- **चुनौती रहित सत्ता की औपनिवेशिक वरिासत:** सत्ता के उपासक वाले समाज में सरकारी अधिकारियों के लिये नैतिक आचरण से वचिलति होना आसान होता है।
- **कानून का कमजोर प्रवर्तन:** भ्रष्टाचार की बुराई को रोकने के लिये कई कानून बनाए गए हैं लेकिन उनके कमजोर प्रवर्तन ने भ्रष्टाचार को रोकने में बाधा के रूप में काम किया है।

भ्रष्टाचार का प्रभाव:

- **लोगों और सार्वजनिक जीवन पर:**
 - **सेवाओं में गुणवत्ता की कमी:** भ्रष्टाचार वाली प्रणाली में सेवा की कोई गुणवत्ता नहीं होती है।
 - गुणवत्ता की मांग करने हेतु किसी को इसके लिये भुगतान करना पड़ सकता है। यह कई क्षेत्रों जैसे- नगर पालिका, बजिली, राहत कोष के वतिरण आदि में देखा जा सकता है।
 - **उचित न्याय का अभाव:** न्याय प्रणाली में भ्रष्टाचार अनुचित न्याय की ओर ले जाता है जिसका खामियाजा पीड़ित लोगों को भुगताना पड़ सकता है।
 - सबूतों की कमी या यहाँ तक कि भिटाए गए सबूतों के कारण किसी अपराध में संदेह का लाभ उठाया जा सकता है।
 - **खराब स्वास्थ्य और स्वच्छता की स्थिति:** भ्रष्टाचार वाले देशों में लोगों के बीच अधिक स्वास्थ्य समस्याएँ देखी जा सकती हैं। इन देशों में स्वच्छ पेयजल, उचित सड़कें, गुणवत्तापूर्ण खाद्यान्न आपूर्ति, दूध में मलिवट आदि जैसी कमियाँ पाई जाती हैं।
 - इन नमिन-गुणवत्ता वाली सेवाओं का कारण इसमें शामिल ठेकेदारों और अधिकारियों द्वारा अनुचित तरीके से धन अर्जति करना है।
 - **वास्तविक अनुसंधान की वफिलता:** परियोजना में अनुसंधान हेतु सरकारी धन की आवश्यकता होती है और कुछ एजेंसियों में भ्रष्ट अधिकारियों की वजह से वतितपोषण में समस्या आती है।
 - ये लोग अनुसंधान के लिये उन जाँचकर्त्ताओं को धनराशि स्वीकृत करते हैं जो उन्हें रशिवत देने लिये तैयार हैं।
- **समाज पर प्रभाव:**
 - **अधिकारियों की अवहेलना:** भ्रष्टाचार में लपित अधिकारी के बारे में नकारात्मक बातें कर लोग उसकी अवहेलना करने लगते हैं। अवहेलना के कारण अधिकारी के प्रति अविश्वास पैदा होता है और परणामस्वरूप नमिन श्रेणी के अधिकारी भी उच्च श्रेणी के अधिकारियों का अनादर करेगा, इसी क्रम में वह भी उसके आदेशों का पालन नहीं करता है।
 - **प्रशासकों के प्रति सम्मान की कमी:** राष्ट्र के प्रशासक जैसे राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के प्रति जनता के सम्मान में कमी आती है। सामाजिक जीवन में सम्मान मुख्य मानदंड है।
 - **सरकारों के प्रति विश्वास की कमी:** जनता अपने जीवन स्तर में सुधार और नेता के सम्मान की इच्छा के साथ चुनाव के दौरान मतदान के लिये जाते हैं। यदि राजनेता भ्रष्टाचार में लपित है, तो वह लोगों का विश्वास खो देगा और वे ऐसे नेताओं का नरिवाचति नहीं करेंगे।
 - **भ्रष्टाचार से जुड़े पदों में शामिल होने से परहेज:** ईमानदार और मेहनती लोग भ्रष्ट समझे जाने वाले विशेष पदों के प्रति घृणा करने लगते हैं।
- **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:**
 - **वदिशी निवेश में कमी:** सरकारी नकियों में भ्रष्टाचार के कारण कई वदिशी निवेशक विकासशील देशों में निवेश करने से कतराते हैं।
 - **विकास में देरी:** एक अधिकारी जिसे परियोजनाओं या उद्योगों के लिये मंजूरी प्रदान करनी होती है, वह धनार्जन और अन्य गैरकानूनी ढंग से लाभ कमाने के उद्देश्य से जान-बूझ कर इस प्रक्रिया में देरी करता है।
 - इससे निवेश, उद्योगों की शुरुआत और विकास की गति धीमी हो जाती है।
 - **विकास का अभाव:** किसी विशेष क्षेत्र में नए उद्योग शुरू करने के इच्छुक कई व्यक्तियों के अनुपयुक्त होने पर अपनी योजनाओं को बदल देते हैं।
 - यदि उचित सड़क, पानी और बजिली की व्यवस्था नहीं है, तो ऐसे क्षेत्र में कंपनियों नए उद्योग स्थापति नहीं करना चाहती हैं, जो उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति में बाधा डालती है।

How corruption in India, neighbours changed in 10 years

Perceived levels of public sector corruption on a scale of zero (highly corrupt) to 100 (very clean)



//

भारत में भ्रष्टाचार से लड़ने को कानूनी और नयामक ढाँचे:

■ कानूनी ढाँचा:

- **भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम (Prevention of Corruption Act), 1988** में लोक सेवकों द्वारा किये जाने वाले भ्रष्टाचार के साथ ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में शामिल लोगों के लिये दंड का प्रावधान है।
 - **वर्ष 2018 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया**, जिसके अंतर्गत रशिवत लेने और रशिवत देने को अपराध की श्रेणी के तहत रखा गया।
- **धन शोधन निवारण अधिनियम (Prevention of Money Laundering Act), 2002** का उद्देश्य भारत में धन शोधन (Money Laundering) के मामलों को रोकना और आपराधिक आय के उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है।
- **कंपनी अधिनियम (The Companies Act), 2013** कॉर्पोरेट क्षेत्र को स्वयंसेवक का अवसर देकर इस क्षेत्र में भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी को रोकथाम करता है। 'धोखाधड़ी' शब्द की एक व्यापक परिभाषा है, इसे कंपनी अधिनियम के अंतर्गत दंडनीय (Criminal) अपराध माना गया है।
- **भारतीय दंड संहिता (The Indian Penal Code- IPC), 1860** के अंतर्गत रशिवत, धोखाधड़ी, विश्वासघात जैसे अपराध से संबंधित मामलों को कवर किया गया है।
- **बेनामी लेन-देन (निषिद्ध) अधिनियम, 1988** उस व्यक्ति के दावे पर प्रतिबंधित करता है जिसने किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर संपत्ति अर्जित की है।

■ नयामक ढाँचा:

- **लोकपाल तथा लोकायुक्त अधिनियम, 2013** ने संघ (केंद्र) के लिये लोकपाल और राज्यों के लिये लोकायुक्त संस्था की व्यवस्था की है।
 - ये "लोकपाल तथा लोकायुक्त" कुछ निश्चित श्रेणी के सरकारी अधिकारियों के विरुद्ध लगे भ्रष्टाचार के आरोपों की जाँच करते हैं।
- **केंद्रीय सतर्कता आयोग:** इसका कार्य प्रशासन की निगरानी करना और भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों में कार्यपालिका को सलाह देना एवं मार्गदर्शन करना है।
- **आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 1952:** IPC की धारा 165 के तहत नरिदष्टि सज़ा को दो वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष कर दिया गया।
 - **1964 में संशोधन:** IPC के तहत 'लोक सेवक' तथा 'आपराधिक कदाचार' की परिभाषा का विस्तार किया गया और एक लोक सेवक के लिये आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति रखने को अपराध बना दिया गया।

भ्रष्टाचार को रोकने में नैतिकता का महत्त्व:

- **नैतिक सीमाएँ स्थापित करना:** नैतिक सिद्धांत सही और गलत को परिभाषित करने के लिये एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। भ्रष्टाचार के संदर्भ में नैतिकता स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करती है, जो स्वीकार्य व्यवहार को अनैतिक या भ्रष्ट आचरण से अलग करती है।
- **जवाबदेही को बढ़ावा देना:** नैतिकता की मांग है कि व्यक्ति अपने कार्यों और नरिण्यों की ज़िम्मेदारी लें। जब लोगों को नैतिक सिद्धांतों द्वारा नरिदेशित किया जाता है, तो उनके कार्यों के पारदर्शी और जवाबदेह होने की अधिक संभावना होती है, जिससे भ्रष्टाचार, जो कि दूसरों को नुकसान

पहुँचा सकता है, की संभावना कम हो जाती है।

- **पारदर्शिता को बढ़ावा देना: पारदर्शिता** एक प्रमुख नैतिक सिद्धांत है। नैतिक संगठनों और व्यक्तियों के पारदर्शी पर और ईमानदारी से काम करने की अधिक संभावना होती है तथा ऐसे माहौल में भ्रष्टाचार का पनपना मुश्किल हो जाता है जहाँ कार्य और नरिणय जाँच के अधीन होते हैं।
- **वशुवास कायम करना:** वशुवास नैतिक व्यवहार की आधारशुला है। जब व्यक्तियों और संसुथानों को भरोसेमंद माना जाता है, तो उनके भ्रष्टाचार में शामिल होने या उसे बरदाशुत करने की संभावना कम होती है। समाज में उचुच सुतर का वशुवास भ्रष्टाचार के प्रतुतुप्रलोभन को कम करता है।
- **नागरुकीं के सदगुणों को प्रोतुसाहति करना:** नैतिक मूलुय नागरुकी सदगुणों को बढ़ावा देते हैं, जो व्यक्तियों को दूसरों की कीमत पर व्यक्तुगित लाभ हासल करने के बजाय समाज के सर्वोतुतम हति में कार्य करने के लुयि प्रोतुसाहति करते हैं। नागरुकी सदगुण भ्रष्टाचार का एक प्रभावशाली नुविराक है।
- **कानून के शासन का समरुथन:** नैतिक व्यवहार **कानून के शासन** और कानूनी तथा नुयामक ढाँचे के प्रतुतुसम्मन को कायम रखता है। भ्रष्ट आचरण में अकसर कानून को दरकनार करना या उसका उल्लंघन करना शामिल होता है एवं नैतिकता का पालन कानूनी मानदंडों के प्रतुतुसम्मन को मज़बूत करता है।
- **वहसिलब्लोअर संरकुषण:** नैतिक संगठन और सरकारें भ्रष्टाचार की रपुोरुत करने वाले वहसिलब्लोअर की सुरकुषा को प्राथमकता देती हैं। नैतिक मूलुय अनैतिक व्यवहार की रपुोरुतगि के लुयि प्रोतुसाहति करते हैं, जो भ्रष्टाचार को उजागर करने एवं संबुधति करने के लुयि महतुतुवपूरुण है।
- **वैशुवकी प्रतुषुठा: अंतरराषुटरीय सुतर पर कसुी राषुट की प्रतुषुठा के लुयि नैतिक व्यवहार आवशुयक है। नैतिक शासन और नमुन भ्रष्टाचार सुतर वाले देश में वदुशी नुवश और सहयुग की संभावना अधुकी होती है।**
- दीरुघकालकी सुथरिता: भ्रष्ट आचरण अकसर अलुपकालकी लाभ प्रदान करता है लेकन दीरुघकाल में नुकसान पहुँचा सकता है। समाज के सतुत वकलस और समुदुधा के लुयि नैतिक व्यवहार आवशुयक है।

सारुवजनकी जीवन के मानक और भ्रष्टाचार की रोकथाम पर नोलन समतुतुकी सफुारशुीं:

1995 में यूनाइटेड कगुडम में नोलन समतुतुि ने भ्रष्टाचार को खतुम करने के लुयि सारुवजनकी पदाधुकारियों, अधुकारियों, सवलल सेवकों, नुकरशाहों, नागरुकी समाज और नागरुकीं दुवारा शामिल कलुय जाने वाले **सात नैतिक मूलुयों** की रूपरेखा तैयार की:

- **नुःसुवार्थता:** सारुवजनकी अधुकारियों/नुकरशाहों को लुकहति के संदरुभ में नरुणय लेना चाहलुय।
- **सतुथनषुठा:** नुकरशाहों को ऐसे कसुी वतुतुतीय या अनुय दायतुव के अधुन बाहरी व्यक्तुतुयों या संगठनों के तहत नुही होना चाहलुय जसुसे उनके आधुकारुकी कर्तुतुव्य प्रभावतुतुि हों।
- **वसुतुनषुठा:** सारुवजनकी कामकाज़, नुयुक्तुतुयों करने, अनुबुंध या पुरसुकार और लाभ के लुयि लुगुओं की सफुारशुि करने में नुकरशाहों को युगुयता को आधार बनाना चाहलुय।
- **जुवाबदेहता:** नुकरशाह अपने नरुणयों और कारुयों के लुयि जनता के प्रतुतुजुवाबदेह होते हैं तथा उनुहें अपने पद को भी जाँच/समीकुषा के अधुन रखना चाहलुय।
- **खुलापन:** नुकरशाहों के सभी नरुणयों और कारुयों में खुलापन होना चाहलुय। उनुहें अपने नरुणयों का सुपषुट कारण देना चाहलुय तथा सुचना तभी प्रतुतुबुधति करनी चाहलुय जब वुयापक जन-हति के लुयि आवशुयक हो।
- **ईमानदारी:** नुकरशाह का यह दायतुव है कवुह सारुवजनकी कर्तुतुवयों से संबुंधति अपने नजुी हतुतुीं की घुषणा करे और ऐसे कसुी वरुध के समाधान के लुयि आवशुयक कदम उठाए जो सारुवजनकी हतुतुीं की रकुषा करने में बाधक हो।
- **नेतुतुव:** नुकरशाहों को अपने नेतुतुव दुवारा उदाहरण पेश करते हुए इन सदुधुांतुओं को वकसुतुि करने के साथ इनका समरुथन करना चाहलुय।

भ्रष्टाचार से नपुटने हेतु दूसरे ARC की सफुारशुीं:

भारत में एक सलुाहकार नकलुय, **दुवतुीय प्रशासनकी सुधार आयुग (दुवतुीय ARC)** ने भ्रष्टाचार के मुदुदे को संबुधति करने और सारुवजनकी प्रशासन की अखंडता तथा दकुषता में सुधार के लुयि कई वुयापक सफुारशुीं की। इन सफुारशुीं का उदुदेशुय भ्रष्टाचार को रोकना एवं सरकारी कारुयों में पारदरुशुतलु व जुवाबदेही बढ़ाना है। **दुवतुीय ARC दुवारा की गई कुकु प्रमुख सफुारशुीं नमुनलखतुतुि हैं:**

- **भ्रष्टाचार वरुधुी उपायों को मज़बूत बनाना:**
 - **वहसिलब्लोअर संरकुषण अधनुयुिम, 2014:** दूसरे ARC ने वहसिलब्लोअरुस के लुयि सुरकुषा और प्रोतुसाहन बढ़ाने हेतु वहसिलब्लोअर संरकुषण अधनुयुिम में संशुोधन की सफुारशुि की। इसमें उनुहें उतुुपीडन से बचाना तथा वतुतुीय प्रोतुसाहन प्रदान करना शामिल है।
 - **कंदरीय सतरकुता आयुग (CVC):** दूसरे ARC ने CVC को अधुकी सुवतुतरता, संसाधन और अधुकार देकर भ्रष्टाचार को रोकने तथा मुकाबला करने में उसकी भूमकुी को मज़बूत करने की सफुारशुि की।
 - **कंदरीय अनुवेषण बुरुी (CBI):** आयुग ने भ्रष्टाचार के मामलों से नपुटने में CBI की सुवायतुतुता और प्रभावशुीलता सुनुशुुचतुि करने के लुयि उपाय सुझाए।
- **ववुकुाधुकार को कम करना:**
 - **मानक संचालन प्रकरुयलु (SOP):** दुवतुीय ARC ने अधुकारियों की ववुकुाधुकार शकुतुतुयों को कम करने के लुयि सरकारी प्रकरुयलुओं और सेवालु हेतु सुपषुट SOP के वकलस की सफुारशुि की। इससे भ्रष्टाचार एवं मनमाने नरुणय लेने की गुंजाइश कम हो जाती है।
 - **प्रुदुयुगकुी का उपायुग:** प्रुदुयुगकुी और ई-गवरुनेंस का लाभ उठाकर सरकारी लेन-देन में मानवीय हसुतकुषेप और ववुकुाधुकार को कम कलुयलु जा सकता है। आयुग ने भ्रष्टाचार के अवसरुओं को कम करने के लुयि इलेकुुटरुनकी तरुीकुओं को अपनाने को प्रोतुसाहति कलुयलु।
- **पुलसु सुधार:**

